IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय घटनाओं की प्रेरक तत्व के रूप में भूमिका: हिसार क्षेत्र विशेष में राजनैतिक चेतना एवं भागीदारी के संदर्भ में

पुष्पा कुमारी[1] एवं डॉ. जयवीर सिंह[2]
शोधार्थी, इतिहास विभाग
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
ओ. पी. जे. एस विश्वविद्यालय, चुरु, राजस्थान

अंग्रेजी शासन भारतीय समाज के किसी भी वर्ग के लिए कभी भी हितकर नहीं था। सन 1757 में अंग्रेजी शासन की स्थापना के बाद से ही धीरे-धीरे स्थानीय जनता में अंग्रेजी शासन के प्रति कटुता एवं रोष की भावना बढ़ती चली गई। 1857 के विद्रोह से पहले अंग्रेजों की प्रशासनिक व्यवस्था, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में किए गए शोषण और समाज व धर्म में असहनीय हस्तक्षेप की वजह से भारत की जनता में गहरा असंतोष व्याप्त था। जिसे समय-समय पर छिट पुट विद्रोह के द्वारा जताया भी जाता रहा। 1857 के समय एवं उसके बाद 1947 तक निरंतर गतिमान स्वतंत्रता आंदोलन में हिसार क्षेत्र जिसमें उस समय हिसार, भिवानी, फतेहाबाद और सिरसा के क्षेत्र शामिल थे, की जनता ने प्रमुख रूप से अपना योगदान दिया। राष्ट्रीय स्तर पर हो रही विभिन्न घटनाओं ने किस प्रकार हिसार क्षेत्र में प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य किया, इसको निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

1857 का विद्रोह अंग्रेजी राज के विरुद्ध भारतीय जनता द्वारा किया गया संगठित एवं व्यापक विरोध था। बैरकपुर से आरंभ इस विद्रोह ने मेरठ और दिल्ली तक पहुंचते-पहुंचते गंभीर रूप धारण कर लिया। इस विद्रोह की लपटों ने दिल्ली से सटे हरियाणा के इलाकों को भी अपनी लपेट में ले लिया। दिल्ली और मेरठ के सैनिकों से प्रेरणा लेकर हिसार क्षेत्र स्थित हिसार, सिरसा और हाँसी स्थानीय छावनियों के सैनिकों और आम जनता ने मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का एलान कर दिया। शहजादा मोहम्मद आजिम ने इस क्षेत्र की जनता का नेतृत्व किया। रोहनात, मंगाली, बड़वा, रतेरा, जमालपुर, सातरोड, खरड़,, हाजीपुर, ओढा, खैरका आदि गांव के निवासियों ने उसको खुला समर्थन एवं सहयोग दिया। मौत को सामने देखकर भी ग्रामवासियों ने भागने का कोई प्रयास नहीं किया जबकि उनके पास अंग्रेजों के बंदूकधारी सैनिकों का सामना करने के लिये केवल भाले, जेलिया, कुल्हाड़ियां, गंडासियां और लाठियां आदि ही हथियार के रूप में थे। दिल्ली के सिपाहियों का अनुसरण करते हुए यहाँ पर भी अंग्रेज अधिकारियों की हत्या की गई, खजानों को लूटा गया, राजस्व विभाग के कार्यालय पर हमला करके कागजात नष्ट किए गए। हाँसी से लाला हुकमचन्द जैन और उनके सहयोगी मिर्ज़ा मुनीरबेग आदि ने अंग्रेजों के संचार के तारों को काट दिया और काफी क्षेत्र पर कब्जा किया। उन्होंने मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर से भी सहायता की अपील की। शीघ्र ही बगावत अपने चरम पर पहुँच गई। लेकिन अंग्रेज अधिकारियों ने सैनिक सहायता मिल जाने पर हिसार क्षेत्र में क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए विशेष दस्तों की नियुक्ति की। लाला हुकमचन्द जैन। मिर्जा मुनीरबेग फकीर चंद के अलावा हाजिमपुर, खरड़, अलीपुर, मंगाली, पुट्ठी मंगल खां, रोहनात, जमालपुर, भाटोल आदि गावों से क्रांतिकारियों को पकड़कर उन्हें हाँसी के मुख्य बाजार में रोड़- रोलर के नीचे कुचल दिया गया। इन गांवों के विद्रोही निवासियों को तोपों के मुँह से बांध कर उड़ा दिया और कितनों को पेड़ से लटकाकर सरेआम फांसी दे दी गई। गांव की जमीन नीलाम कर दी गई। लेकिन इस क्षेत्र के क्रांतिकारी दिल्ली के पतन तक लगातार संघर्षरत रहे।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

1885 में कांग्रेस की स्थापना के साथ ही हरियाणा क्षेत्र में भी जागृति का वातावरण तैयार हो गया। सबसे पहले अम्बाला में कांग्रेस की इकाई का गठन हुआ। राष्ट्रीय नेता लाला लाजपत राय द्वारा कांग्रेस की इकाई का गठन हिसार में करने के साथ ही यहाँ की जनता राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली गतिविधियों का हिस्सा बन गई। एक ओर जहाँ कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीय आधार मजबूत हो रहा था वहीं दूसरी ओर हिसार में कांग्रेस की गतिविधियों में वृद्धि हो रही थी। 1887 के इलाहाबाद कांग्रेस अधिवेशन में हिसार कांग्रेस से चार प्रतिनिधि पहुंचे थे जो कि अधिवेशन में सकारात्मक चर्चा का विषय रहा। आने वाले वर्षों में भी कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में यहाँ से प्रतिनिधि जाते रहे। हिसार कांग्रेस की बढ़ती लोकप्रियता की वजह से स्थानीय अंग्रेज अधिकारी इन कांग्रेसी नेताओं की गतिविधियों के प्रति काफी आशंकित रहते थे।

आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल, 1875 को बम्बई में स्वामी दयानंद ने की थी। वह प्रत्येक स्थिति में भारत की स्वतंत्रता चाहते थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम 'स्वराज्य' का नारा दिया था। उन्होंने इस संस्था के माध्यम से देश के उत्थान और स्वराज्य के लिए प्रयास किए। हिसार में वर्ष 1886 में लाला लाजपत राय ने आर्यसमाज की स्थापना की और इसके माध्यम से समाज और धर्म में सुधार के साथ-साथ हिसार की जनता में राजनीतिक नव चेतना का संचार किया। हिसार आर्य समाज का प्रमुख केंद्र बना। आर्य समाज के प्रचारक दूरस्थ गांवों में भी जाकर न केवल सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार करते थे बल्कि देशभक्तिपूर्ण भाषणों के द्वारा राजनैतिक जागरण का कार्य भी करते थे। लाला चंदूलाल और डॉक्टर रामजीलाल अग्रणी कार्यकर्ता रहे। राजनीति में गांधीजी के पदार्पण से पहले हिसार क्षेत्र में राजनीतिक चेतना का विस्तार करने में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण प्रेरणा दी।

1905 का बंगाल विभाजन और स्वदेशी आंदोलन ऐसी घटनाएं थी जिन्होंने देशव्यापी जनता को अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट करने में प्रेरक तत्व की भूमिका का निर्वहन किया। कांग्रेस के नेतृत्व में अंग्रेजों के प्रति बंगाल विभाजन के विरोध को क्रियात्मक रूप देने के लिए संपूर्ण भारत में स्वदेशी आन्दोलन चलाया गया। स्वदेशी आन्दोलन का हिसार की जनता पर अच्छा खासा प्रभाव पड़ा। हड़तालें की गई, हिंदू-मुस्लिम एकता संबंधित कार्यक्रम हुए, बाजार बंद किए गए, हिसार के कटला रामलीला नामक स्थान पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्वदेशी एसोसिएशन के अंतर्गत स्वदेशी अपनाओ और विदेशी का बहिष्कार आन्दोलन चलाया गया। परिणामस्वरूप स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री हेतु दुकानें खुली और विदेशी वस्तुओं के विरोध के कारण इनकी बिक्री बहुत कम रह गयी विशेषकर विदेशी वस्त्रों और शराब की। हिसार के लोग राष्ट्रीय स्तर की घटनाओं की जानकारी रखते थे और उसमें महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाते थे।

रौलेट बिल जो सर सिडनी रोलेट की अध्यक्षता में फरवरी 1918 में तैयार किए गए, ने राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक हलचल मचा दी। रोलेट बिलों के विरोध में हिसार में भी एक विशाल जनसभा का आयोजन किया गया जिसमे इन बिलों को मौलिक अधिकारों के विरुद्ध बताते हुए सरकार से इन्हें वापस लेने का प्रस्ताव पारित किया गया। बिल पास कर दिए गए तो गांधीजी के आह्वान पर पूरा हरियाणा में 30 मार्च से लेकर 19 अप्रैल, 1919 तक आंदोलनरत रहा। पलवल में गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद यह आंदोलन और अधिक तीव्र हो गया। 6 अप्रैल, 1919 को हिसार में पूर्ण हड़ताल हुई। आर्यसमाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद जी के आह्वान पर हिसार के ग्रामीण क्षेत्रों की जनता भी इस आंदोलन में कूद पड़ी। लोगों ने काले कपड़े पहनकर, हाथ में काले झंडे लेकर और काले बिल्ले लगाकर विरोध प्रदर्शन किया। हांसी, सिरसा, भिवानी और फतेहाबाद में भी इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समय राष्ट्रीय नेता लाला लाजपत राय के हिसार आगमन ने यहाँ की जनता में नई स्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार किया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

खिलाफत आंदोलन एवं असहयोग आंदोलन जिनका नेतृत्व महात्मा गाँधीजी ने किया था, ने हिसार की जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने में एक प्रभावकारी प्रेरक तत्व के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन किया। हिसार में मिर्जा नजीर बेग, नादिर खान और मोहम्मद इस्माइल के नेतृत्व में खिलाफत कमेटी का गठन किया गया। साथ ही खिलाफ़त आंदोलन के लिए सक्रिय सिपाहियों की संख्या लगभग 4000 थी। हिंदू-मुस्लिम एकता भी अपने चरम पर थी। अगस्त, 1920 में असहयोग आन्दोलन के प्रारंभ होने के बाद जब गांधीजी ने भिवानी का दौरा किया तो हिसार जिले में भी नए उत्साह का संचार हुआ। उनके विचारों से प्रभावित होकर लाला श्यामलाल सत्याग्रही, लाला बख्शीराम और बाबू जुगल किशोर ने वकालत छोड़ दी तो वही वैद्य लेखराम शर्मा और मदन गोपाल जी ने विद्यालय छोड़ दिए। पंजाब विधान परिषद के चुनावों के विरोध में भाषण दिए गए। इस समय हिसार कांग्रेस की सदस्य संख्या में उल्लेखनीय बढ़ोतरी दर्ज की गई। स्वदेशी का प्रचार, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना और शराब की दुकानों पर धरना देने के कार्यक्रम भी चरम पर थे, जिनमे महिलाओं की उपस्थिति भी देखी गई। 17 नवंबर, 1921 को प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन के दिन विरोधस्वरूप हिसार में दुकानें और बाजार बिल्कुल बंद रहे। विद्यार्थियों और छात्रों ने विद्यालयों का बहिष्कार किया, वहीं वकीलों ने वकालत त्याग दी। चेयरमैन, नगर पालिका हिसार बनारसी दास ने त्यागपत्र दे दिया। असहयोग आंदोलन के दौरान हिसार के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार किया गया जिनमें लाला श्यामलाल सत्याग्रही, लाला हरदेव सहाय, पं॰ नेकीराम शर्मा, के॰ ए॰ देसाई, मेला राम, लाला विधिचंद, गोकुल चंद आर्य आदि शामिल थे। पूरे आंदोलन में हिंदू-मुस्लिम एकता गजब थी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन राष्ट्रीय स्वरूप की तर्ज पर हिसार क्षेत्र में भी सफलतापूर्वक चलाया गया। पूर्व में राष्ट्रीय कांग्रेस के निर्णय के अनुरूप 26 जनवरी, 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते हुए हिसार क्षेत्र के प्रमुख नेताओं जैसे पं॰ नेकीराम शर्मा और गोपीचंद भार्गव आदि ने विभिन्न स्थानों पर ध्वजारोहण किया। दांडी यात्रा के बाद गाँधीजी द्वारा नमक कानून तोड़ने के बाद सविनय अवज्ञा आंदोलन संपूर्ण भारत में फैल गया। हिसार कांग्रेस कमेटी की बैठक में भी नमक कानून तोड़ने का निर्णय लिया गया। इस दौरान नमक कानून तोड़ना, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, शराब की दुकानों के समक्ष धरना देना, सरकारी सेवाओं से त्यागपत्र देना, सभाएं करना, भाषण देना, गिरफ्तारियां देना आदि गतिविधियाँ संपूर्ण हिसार क्षेत्र में उत्साहपूर्वक चलती रही। जेल जाने वाले सत्याग्रहियों का भव्य स्वागत किया जाता था। आंदोलन के दूसरे चरण में राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के कारण भी यहाँ कई स्थानों पर हड़तालें की गई।

भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय जनता की स्वतंत्रता की आकांक्षाओं का चरमोत्कर्ष था। महात्मा गाँधीजी द्वारा 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक के बाद जैसे ही 'करो या मरो' का नारा दिया गया, वैसे ही संपूर्ण भारत बगावत करके सड़कों पर उतर आया। यह समाचार हिसार पहुंचते ही अंग्रेज विरोधी नारों ने आसमान को गुंजा दिया। वह किसान हो या मजदूर, व्यापारी हो या कर्मचारी, शिक्षित हो या अशिक्षित, महिलाएं हो या बच्चे, समाज का प्रत्येक वर्ग इस आंदोलन में शामिल हो गया। अंग्रेजी सरकार ने दमन और कठोर कार्यवाही का सिलसिला जारी रखा और इस क्षेत्र से 50 लोगों को गिरफ्तार किया गया। राष्ट्रीय तर्ज पर ही यहाँ पर भी क्रांतिकारियों ने सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के लिए पुलिस स्टेशन, रेलवे स्टेशन, डाक व तार घर आदि पर हमला किया और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

आजाद हिंद फौज स्वतंत्रता आंदोलन का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है जिसने राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी प्रभावशाली भूमिका निभाई। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज ने कई मोर्चों पर सफलतापूर्वक लड़ाइयाँ लड़ीं। इस फौज में हिसार क्षेत्र के कुल 539 व्यक्ति थे जिनमें 478 सैनिक एवं 61 अधिकारी थे। सैनिकों की सहायता के लिए आजाद हिंद फौज फंड में हिसार क्षेत्र द्वारा 1100 रुपये का योगदान भी किया गया।

1945 के बाद द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक राष्ट्रीय स्तर की तीव्र गति से हो रही उथल-पुथल ने हिसार में चल रहे घटनाक्रम को भी प्रभावित किया। 15 अगस्त, 1947 के दिन हिसार क्षेत्र की जनता भी उसी रोमांच और प्रसन्नता से अभिभूत थी जैसाकि अखिल भारतीय जनता महसूस कर रही थी।

स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली घटनाएं हिसार क्षेत्र में रहने वाली जनता के लिए प्रेरक तत्वों का काम कर रहे थी। हिसार क्षेत्र में राजनैतिक चेतना का उद्भव, विकास एवं राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भागीदारी इन्हीं प्रेरक तत्वों से मिली प्रेरणा का परिणाम थी।

संदर्भ सूची

- गुप्ता, जुगलकिशोर (1991), हिस्टरी ऑफ सिरसा टाउन, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली
- जुनेजा, एम. एम.(1981), एमिनेंट फ्रीडम फाइटर्स इन हरियाणा, मॉडर्न बुक कंपनी, हरियाणा
- डॉ॰ महेंद्र सिंह(2019), हिसार-ए-फिरोजा: इतिहास के झरोखे में, रिसर्च इंडिया प्रेस, नई दिल्ली
- डॉ॰ महेंद्र सिंह(2021), हरियाणा में 1857: जनविद्रोह, दमन व लोक चेतना, पाठक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली
- परदमन सिंह एवं एस॰ वी॰ शुक्ला, (1991) फ्रीडम स्ट्रगल इन हरियाणा एंड इंडियन नेशनल कांग्रेस 1885-1985, दिल्ली
- यादव, के. सी.(2003), हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति, भाग-2, मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली